शिक्षा संवाद
2020, 7(1-2): 61
ISSN: 2348-5558
©2020, संपादक, शिक्षा संवाद, नई दिल्ली

कविता

पूछता क्यों शेष कितनी रात

महादेवी वर्मा

पूछता क्यों शेष कितनी रात?
छू नखों की क्रांति चिर संकेत पर जिनके जला तू
स्निग्ध सुधि जिनकी लिये कज्जलदिशा में हँस चला तू-
परिधि बन घेरे तुझे, वे उँगलियाँ अवदात!

झर गये ख्द्योत सारे,
तिमिरवात्याचक्र में सब पिस गये अनमोल तारे-;
बुझ गई पवि के हृदय में काँपकर विद्युत!शिखा रे-
साथ तेरा चाहती एकाकिनी बरसात!

व्यंग्यमय है क्षितिजघेरा-
प्रश्नमय हर क्षण निठुर पूछता सा परिचय बसेरा;
आज उत्तर हो सभी का ज्वालवाही श्वास तेरा!
छीजता है इधर तू, उस ओर बढता प्रात!

प्रणय लौ की आरती ले
धूम लेखा स्वर्णकुमकुम वारती ले-अक्षत नील-
मूक प्राणों में व्यथा की स्नेहउज्जवल भारती ले-
मिल, अरे बढ़ रहे यदि प्रलय झंझावात।

कौन भय की बात।
पूछता क्यों कितनी रात?

*****